1

BA-III (H)
मैथिली
पत्र - तेसर

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

1

BA-II
मैथिली (अनिवार्य मातृभाषा)

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

साहित्य ककरा कहै : निबंधक समीक्षा

विश्वस्तर पर पहुँचयबाक कारणे साहित्य जगतमे प्रख्यात भेलाह डॉ० सुभद्र झा। सँगहि मैथिलीक प्राचीन सम्पदाकेँ अपन समालोचक दृष्टि दे' ओकरा स्थिर आ प्रमाणिक बनौलनि।

प्रस्तुत निबन्ध साहित्य ककरा कहै, नामहिक पत्रक उत्तर तँ अछि आयुष्मान

ग्रंथकर तँ लिखैत छ' जे कोनो (साहित्यिक निबन्ध प्रणाली) केओ केहनो रहैछ। सभक इच्छा रहैत छैक। महर्षि नारदक शब्दमे कहल जा सकैछ - प्रशंसा सँ सम्पूर्ण संसार प्रसन्न होइछ तथा निन्दासँ सबकेँ अप्र-सन्नता होइत छैक। हमरा बुझने प्रशंसा वा निन्दा करबाक पूर्ति वा करबाक लक्ष्य होइछ। जेना भगवान रामकेँ रावणक संहारकारी तथा रावणकेँ सीताक चोर कहब क्रमशः हुनका प्रशंसा तथा निन्दा बुझल जाइछ। सामान्य व्यक्तियोंकेँ जाहि कथनसँ आह्लादक अनुभव होइन्हि से भेल प्रशंसा आ जे ग्लानिक अनुभव भेलनि तँ निन्दा भेल। जेना प्रातः स्नान, स्नानीक लेल प्रशंसा थिक तँ दुपहरमे केओ स्नान करैछ तँ निन्दाक रूपमे चर्चा होइछ। जेना अपना ठामक लेल राति स्नान अप्रशस्त अछि मुदा पाश्चात्यमे प्रशस्त अछि।

प्रश्न अछि जे साहित्य ककरा कही ? एकर उत्तर देब कठिन अछि। तुलसी दास साहित्यिक हलाह तँ हरिमोहन बाबू सेहो साहित्यिक हलाह तेसर बाबू साहेब चौधरी

सेहो साहित्यिक छलाह। इहो सभ दिन कहल जाइछ जे मैथिली साहित्य, नाट्य साहित्य, लोक साहित्य, विधि साहित्य, दर्शन साहित्य, इतिहास साहित्य आदि। साहित्य पदक प्रयोग जाहि-जाहि प्रकरणमे कैल जाइछ सभ ठाम एके अर्थक प्रयोग मानल जा सकय। एहि लक्षणक आधार पर त विज्ञापन, पोस्टर आदि सेहो साहित्यक कोटिमे आबि जाइछ। तहिना विज्ञानलिखनिहार, पोस्टर छापनिहार सेहो साहित्यिक कोटि मे आबि जयताह। मुदा समाज हुनके साहित्यिक मानैत अछि- जिनकर रचना समाजमे समादृत होइछ तथा जे अपन रचनासँ साहित्यिक ख्यातिक आकांक्षी रहैत छथि।

एतावता व्यवहारिक दृष्टिसँ साहित्य तथा काव्य दूनू समानार्थक थिक। संस्कृतमे साहित्य तथा काव्य दूनूक प्रयोग प्राय: एके अर्थमे होइछ- जेना साहित्यदर्पण तथा काव्य प्रकाश। मुल विषय साहित्य कैँ थीकि जे प्रतिहिक आधार पर काव्यक लक्षणक

मानल जायत तऽ कथा कहनिहार कविकें लोक साहित्यिक कहैत अछि त' ओ अपना कें प्रतिष्ठित बुझैत छथि। जेना सीपाहीकें जमेदार कहने आनन्द होइत छैक, तहिना खलासीके ड्रेवर कहने गर्वक अनुभूति होइत छैक। तें कथामे आनन्दक अनुभूति मात्रसँ किओ साहित्यक नहि बुझल जा सकैत अछि। ओहि कथाक वाक्यकें साहित्य।

— समाप्त —

Samjt
३०/०४/२०